B.A. Part - I

Paper - II

Macro Economics

Munmun Choudhary
Asst. Prof.
Department of Economics,
A.S. College, Bikramganj.

Topic :- लागत और राजस्व की धारणा (Cost and Revenue Perception)

Introduction :-

मूल्य निर्धारण के सिद्धान्त में लागत एवं आय की धारणाओं का महत्वपूर्ण स्थान है किसी वस्तु के मूल्य का निर्धारण माँग एवं पूर्ति की शक्तियों के द्वारा होती है। वस्तु की माँग उपभोक्ता करते है तथा उसकी पूर्ति उत्पादकों द्वारा की जाती है। उपभोक्ता किसी वस्तु की माँग इसलिए करते है क्योंकि उसमें उपयोगिता होती है। अतः माँग - पक्ष का संबंध वस्तु की उपयोगिता से है। दूसरी ओर उत्पादक अधिकतम मुनाफा कमाने के दृष्टिकोण से वस्तु की पूर्ति करते है लेकिन वस्तु की पूर्ति करते समय वे वस्तु की लागत पर ध्यान रखते है यानि पूर्ति लागत पर निर्भर करती है। इस प्रकार पूर्ति - पक्ष का संबंध उत्पादन लागत अथवा उत्पादन व्यय (Cost of Production) से है लेकिन उत्पादन लागत के साथ - साथ उत्पादन का मुनाफा वस्तु की बिक्री से प्राप्त आय (Revenue) पर निर्भर करती है वास्तव में उत्पादन - लागत एवं आय (Cost of production and Revenue) के बीच का अन्तर ही उत्पादक का मुनाफा होता है।

Scanned by TapScanner

अतः मूल्य-निर्धारण के लिए लागत एवं आय की धारणाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। अर्थशास्त्र में लागत एवं आय की विभिन्न धारणाओं का प्रयोग होता है। लागत एवं आय की विभिन्न धारणाओं से संबंधित कई लागत एवं आय रेखाओं या रेखाएं (cost and Revenue curves) भी होती है जिनका प्रयोग मूल्य निर्धारण के सिद्धांत में होता है।

* उत्पादन लागत का अर्थ (Meaning of cost of Production)

किसी भी वस्तु के उत्पादन के लिए उत्पादन के विभिन्न साधनों की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिए, उत्पादन में कच्चे माल, भूमि, श्रम पूँजी, संगठन, साहस इत्यादि की जरूरत पड़ती है। उत्पादक को विभिन्न साधनों के प्रयोग के बदले पारिश्रमिक देना पड़ता है। अतः उत्पादन में लगे हुए विभिन्न साधनों पर उत्पादक को जो खर्च करना पड़ता है, उसे उत्पादन व्यय अथवा उत्पादन-लागत (cost of Production) कहते हैं। इसमें साहसी अथवा उत्पादक जो उत्पादन में जोखिम उठाता है, उसके बदले जो लाभ उसे प्राप्त होता है उसे भी उत्पादन के लागत में सम्मिलित किया जाता है क्योंकि साहसी भी उत्पादन का

Scanned by TapScanner

एक साधन है। उत्पादन लागत के संबंध में निम्नलिखित धारणाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:—

(1) कुल उत्पादन-लागत (Total Cost of Production);

(2) औसत लागत (Average Cost) तथा

(3) सीमान्त लागत (Marginal Cost),

(1) कुल उत्पादन लागत
(Total Cost of Production)

उत्पादन में लगे हुए विभिन्न साधनों पर उत्पादक को जो खर्च करना पड़ता है उन सभी खर्चों के योग को कुल उत्पादन-लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में; उत्पादन में लगाये गए विभिन्न साधनों के लिए जो कीमत चुकायी जाती है उसके कुल योग को कुल व्यय या कुल उत्पादन-लागत कहा जाता है। उदाहरण के लिए, कलम के किसी कारखाने में यदि 100 कलम बनाने में कुल 500 रुपये खर्च होता है तो इसे कुल उत्पादन-लागत कहेंगे। कुल उत्पादन-व्यय या कुल उत्पादन-लागत में निम्नलिखित मदें सम्मिलित रहती हैं:—

(1) भूमि एवं मकान का किराया (Rent of land and buildings),

(2) मजदूरों की मजदूरी (Wages of Labourers),

Scanned by TapScanner

(3) पूँजी का ब्याज [Intrest on Capital],

(4) मशीन, मकान आदि का घिसावट - व्यय [Cost of depreciation of Machines, buildings etc.]

(5) कच्चे माल की कीमत [Price of Raw materials]

(6) प्रबन्ध का व्यय [Cost of management]

(7) विज्ञापन व्यय [Cost of Advertisement],

(8) साहसी का मुनाफा [Profit of the enterpreneur]

(9) माल की ढुलाई का व्यय [Cost of transport of Goods]

(10) बीमा का व्यय [Cost of insurance]।

उत्पादन का कार्य विभिन्न साधनों के सहयोग से होता है जिसके लिए उन्हें पारिश्रमिक देना पड़ता है। उदाहरण के लिए, भूमि का किराया, मजदूरों की मजदूरी, पूँजी का ब्याज, प्रबन्धकर्त्ता अथवा संगठनकर्त्ता को वेतन तथा साहसी को मुनाफा प्राप्त होता है। वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल का प्रयोग होता है जिसके लिए कीमत चुकानी पड़ती है। मशीन एवं मकान तथा अन्य उपकरणों पर घिसावट - व्यय (cost of depreciation) को भी एक अलग घिसावट - कोष में रखना होता है।

मशीन एवं उपकरण आदि प्रयोग में आते-आते घिसते रहते हैं और एक अवधि के बाद उनके स्थान पर नई मशीनों एवं उपकरणों को लगाना पड़ता है। इसके लिए उत्पादक को एक ही समय बहुत बड़ी रकम का व्यय करना पड़ सकता है, अतः प्रति वर्ष मशीन या उपकरण की घिसावट के बराबर रकम घिसावट-व्यय के रूप में घिसावट-कोष में जमा कर देता है ताकि मशीन या उपकरण के बेकार होने पर उसी रकम से दूसरी मशीन या उपकरण खरीद लिया जाय। उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि किसी मशीन की कीमत 10 लाख रुपये है और उसकी आयु 10 वर्ष है। अतः प्रति वर्ष उस मशीन में 1 लाख रुपये के बराबर घिसावट होगी। अतः प्रति वर्ष 1 लाख रुपये घिसावट-व्यय के रूप में घिसावट-कोष में जमा किया जायेगा और 10 वर्ष में 10 लाख रुपये जमा हो जायेगा तो उसी रकम से नई मशीन खरीद ली जायेगी। उत्पादन-व्यय में कच्चे माल एवं तैयार माल की ढुलाई पर किया जाने वाला व्यय भी शामिल रहता है। विज्ञापन एवं विक्रय-प्रोत्साहन पर किये जाने वाला व्यय भी उत्पादन-व्यय का अंश होता है। इसी प्रकार कारखानों में मशीनों, मकान, उपकरणों आदि का बीमा कराया जाता है जिस पर किया गया व्यय उत्पादन-व्यय या उत्पादन लागत में जोड़ दिया जाता है।

Scanned by TapScanner